भारत - ईरान संबंध

राजनीतिक संबंध :

भारत और ईरान के बीच शताब्दियों से परस्पर संबंध रहे हैं और इन दोनों देशों के बीच प्रभावपूर्ण परस्पर संवाद होते रहे हैं। इन दोनों देशों की सीमाएं वर्ष 1947 तक आपस में मिलती थीं और भाषा, संस्कृति एवं परंपराओं के क्षेत्र में अनेक सामान्य विशिष्टताएं देखने को मिलती हैं। दक्षिण एशिया एवं फारस की घाटी दोनों के बीच वाणिज्यिक, ऊर्जा, संस्कृति के क्षेत्र में और दोनों देशों की जनता के बीच आपस में गहन संबंध हैं।

स्वतंत्र भारत और ईरान ने 15 मार्च, 1950 को राजनयिक संबंध स्थापित किए। तेहरान में भारतीय राजदूतावास के अलावा, भारत का ईरान में फिलहाल दो कांसुलावास - बांदर अब्बास तथा जहेदान में हैं। शाह ने फरवरी / मार्च, 1956 में भारत का दौरा किया और प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने सितंबर 1959 में ईरान का दौरा किया। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने अप्रैल, 1974 में और प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई ने जून, 1977 में ईरान का दौरा किया। इसके बाद, शाह ने फरवरी, 1978 में भारत का दौरा किया।

वर्ष 1979 में हुई ईरानी क्रांति ने भारत और ईरान के बीच आपसी संबंध का एक नया द्वार खोल दिया, जिसके फलस्वरूप दोनों देशों की ओर से उच्चस्तरीय सरकारी दौरे हुए। भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव ने सितंबर, 1993 में ईरान का दौरा किया तथा ईरान के राष्ट्रपति श्री अकबर हाशमी रफसंजानी ने अप्रैल, 1995 में भारत का दौरा किया। भारतीय उप राष्ट्रपति श्री आर.के. नारायण ने अक्टूबर, 1996 में ईरान का दौरा किया। नई सहस्ताब्दी में, परस्पर दौरे और अधिक किए गए। प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने वर्ष 2001 में ईरान का दौरा किया जबकि राष्ट्रपति मोहम्मद खातमी ने वर्ष 2003 में भारत का दौरा किया जब वे गणतंत्र दिवस के अवसर समारोह पर मुख्य अतिथि भी थे। ईरान के राष्ट्रपति डॉ. महमूद अहमदिनेजाद ने दिनांक 29 अप्रैल, 2008 को भारत का दौरा किया।

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 28-31 अगस्त, 2012 की अवधि के दौरान तेहरान में आयोजित 16वें निर्गुट शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए ईरान का दौरा किया। ईरान ने 2012 में गुट निरपेक्ष आंदोलन की अध्यक्षता ग्रहण की। इस सम्मेलन में अतिरिक्त समय के दौरान माननीय प्रधानमंत्री ने सुप्रीम नेता अयातोल्लाह अली खामानाई और राष्ट्रपति डॉ. महमूद अहमदिनेजाद से मुलाकात की। दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय संबंधों की संपूर्ण पहलुओं की समीक्षा की और भारत एवं ईरान के बीच शताब्दी पुराने संबंध को और अधिक प्रगाढ़ बनाने पर जोर दिया। माननीय विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद ने 03

से 05 मई, 2013 के दौरान आयोजित 17वें भारत - ईरान संयुक्त आयोग की बैठक में भाग लेने के लिए तेहरान का दौरा किया। उन्होंने राष्ट्रपति डॉ. महमूद अहमदिनेजाद, मजलिस स्पीकर, डॉ. अली लारिजानी तथा डॉ. अली अकबर विलायती, अंतरराष्ट्रीय मामलों से संबद्ध सुप्रीम नेता के वरिष्ठ सलाहकार से मुलाकात की।

भारत के माननीय उप राष्ट्रपति श्री एम. हामिद अंसारी ने दिनांक 4 अगस्त, 2013 को नव निर्वाचित ईरान के राष्ट्रपति, डॉ. हसन रोहानी के शपथ समारोह में भाग लिया। माननीय उप राष्ट्रपति ने डॉ. हसन रोहानी से मुलाकात की और इन दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय, क्षेत्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रों में परस्पर हित के मुद्दों पर चर्चा की। शपथ समारोह के दौरान अतिरिक्त समय में, माननीय उप राष्ट्रपति ने ईरान के मजलिस के स्पीकर, डॉ. अली लारिजानी से भी मुलाकात की।

माननीय विदेश मंत्री ने 13 सितम्बर, 2013 को बिश्केक में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन (एस सी ओ) के राष्ट्राध्यक्षों के शिखर सम्मेलन के दौरान अतिरिक्त समय में ईरान के नए राष्ट्रपति डॉ. हसन रोहानी से मुलाकात की।

दोनों देशों के बीच विभिन्न स्तरों पर अनेक द्विपक्षीय परामर्शदात्री प्रक्रिया तंत्र हैं जिनकी नियमित रूप से बैठकें होती रहती हैं। दोनों देशों के विदेश कार्यालय द्विपक्षीय तथा क्षेत्रीय मुद्दों के बारे में नियमित परामर्श बैठकें भी आयोजित करते हैं। विदेश सचिव डा. एस जयशंकर ने 13 और 14 अगस्त 2015 को ईरान का दौरा किया। विदेश मंत्री ज़रीफ ने 28 फरवरी, 2014 को और फिर 14 अगस्त, 2015 को भारत का दौरा किया। विदेश मंत्री ज़रीफ ने हार्ट ऑफ एशिया सम्मेलन के दौरान अतिरिक्त समय में इस्लामाबाद में 9 दिसंबर, 2015 को विदेश मंत्री से मुलाकात की। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत दोभाल ने 10 और 11 फरवरी 2015 को ईरान का दौरा किया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 9 जुलाई, 2015 को ऊफा (रूस) में ईरान के राष्ट्रपति डा. हसन रोहानी से मुलाकात की।

II वाणिज्यिक संबंध :

भारत और ईरान के बीच विभिन्न सेक्टरों में आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंध हैं। तथापि, काफी लंबे समय से व्यापारिक संबंधों में ईरान से भारत द्वारा कच्चे तेल का आयात करना प्रमुख रहा है जिससे समग्र व्यापारिक संतुलन ईरान के पक्ष में रहा है।

वित्त वर्ष 2014 -15 के दौरान भारत और ईरान के बीच द्विपक्षीय व्यापार 13.13 बिलियन अमरीकी डॉलर का था। भारत ने 8.95 बिलियन अमरीकी डॉलर की वस्तुएं

मुख्यत: कच्चे तेल का आयात किया और 4.17 बिलियन अमरीकी डॉलर का निर्यात किया। ईरान पर लगाए गए एकपक्षीय आर्थिक प्रतिबंधों का द्विपक्षीय व्यापार पर प्रतिकूल असर हुआ है क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग चैनलों का धीरे धीरे अस्तित्व समाप्त हो गया है।

भारत और ईरान आर्थिक एवं व्यापारिक मुद्दों पर भारत ईरान संयुक्त आयोग बैठक (जे सी एम) के ढांचे के अंतर्गत नियमित रूप से द्विपक्षीय विचार विमर्श करते रहते हैं। 28 दिसंबर, 2015 को 18वीं भारत - ईरान संयुक्त आयोग बैठक (जे सी एम) का आयोजन नई दिल्ली में हुआ था। इसकी अध्यक्षता माननीया विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज और ईरान के आर्थिक एवं वित्त मंत्री श्री अली तायबनिया द्वारा की गई। संयुक्त आयोग बैठक के दौरान व्यापार, वित्त, ऊर्जा, अवसंरचना और सांस्कृतिक मुद्दों में सहयोग के लिए एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए गए। बैठक में राजनयिक एवं आधिकारिक पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा सुगमता करार का आदान - प्रदान किया गया।

मुंबई में 12 जून, 2015 को आई एन एस टी सी देशों के प्राइवेट फ्रेट फारवर्डर्स तथा अन्य हितधारकों के सम्मेलन का आयोजन किया गया। 21 अगस्त, 2015 को नई दिल्ली में आई एन एस टी सी की समन्वय समिति की 6वीं बैठक का आयोजन किया गया।

वाणिज्य सचिव श्री राजीव खेर ने 5 से 8 अप्रैल, 2015 के दौरान ईरान का दौरा किया।

वित्त सचिव श्री राजीव महर्षि ने 25 और 26 जुलाई, 2015 के दौरान ईरान का दौरा किया।

टाटा ग्रुप से एक 9 सदस्यीय शिष्टमंडल ने 30 मई से 01 जून, 2015 के दौरान ईरान का दौरा किया। सी आई आई के नेतृत्व में एक 15 सदस्यीय शिष्टमंडल ने 22 से 24 जुलाई, 2015 के दौरान ईरान का दौरा किया। एसोचैम के नेतृत्व में 97 भारतीय कंपनियों ने तेहरान में 4 से 6 सितंबर, 2015 के दौरान वस्त्र प्रदर्शनी "ईरानटेक्स" में भाग लिया। एफ आई ई ओ के नेतृत्व में 45 भारतीय कंपनियों ने 5 से 8 अक्टूबर, 2015 के दौरान तेहरान आंतरिक उद्योग प्रदर्शनी में भाग लिया।

सड़क, परिवहन एवं जहाजरानी मंत्री श्री नितिन गडकरी ने 5 से 7 मई, 2015 के दौरान ईरान का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान चाहबहार बंदरगाह में भारत की भागीदारी के लिए एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए गए।

III. सांस्कृतिक संबंध :

दिनांक 3 मई, 2013 को श्री सलमान खुर्शीद, भारत के माननीय विदेश मंत्री ने तेहरान में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र का औपचारिक उद्घाटन किया जब वे 17वें भारत - ईरान संयुक्त आयोग बैठक (जे सी एम) में भाग लेने के लिए ईरान का दौरा किया। सांस्कृतिक केंद्र आपसी हित के सेमिनारों / सम्मेलनों तथा संगीत समाराहों का नियमित रूप से आयोजन करता है।

दूतावास 'आइने हिंद' (भारत का दर्पण) नामक एक द्विमाही पत्रिका भी निकाल रहा है जो भारत को ईरान की आम जनता के ड्राइंग रूम में ले जा रही है।

भारत में लगभग 8000 ईरानी छात्र अध्ययन कर रहे हैं। भारत ईरान के छात्रों को आई टी ई सी, आई सी सी आर एवं कोलंबो योजना तथा आई ओ आर - ए आर सी योजनाओं के तहत प्रतिवर्ष 67 छात्रवृत्तियां प्रदान करता है।

भारत पिछले कुछ वर्षों में ईरान के पर्यटकों के लिए सबसे पसंदीदा पर्यटक स्थलों में से एक के रूप में उभरा है और प्रति वर्ष लगभग 27,000 ईरान के लोग विभिन्न प्रयोजनों से भारत का दौरा करते हैं। भारत ने तेहरान में पर्यटन वीजा संग्रहण का सफलता पूर्वक आउटसोर्स किया है ताकि भारत का दौरा करने वाले ईरानी पर्यटकों के लिए वीजा सुविधा को सुगम बनाया जा सके।

IV. भारतीय समुदाय :

भारत और ईरान की संयुक्त कोंसुलर समिति की 9वीं बैठक नई दिल्ली में 18 दिसंबर 2015 को हुई। भारत और ईरान की संयुक्त कोंसुलर समिति की 9वीं बैठक नई दिल्ली में 18 दिसंबर 2015 को हुई। भारत के शिष्टमंडल का नेतृत्व विदेश मंत्रालय में संयुक्त सचिव (सी पी वी) श्री पी कुमारन द्वारा किया गया।

ईरान में पहले भारतीय समुदाय के लोगों की संख्या काफी अधिक थी लेकिन धीरे-धीरे इनकी संख्या कम हुई है और अब तेहरान में लगभग 100 परिवारों तथा जहेदान में लगभग 20 परिवारों का एक छोटा समूह है। ईरान में अनेक भारतीय छात्र हैं, जिनकी संख्या लगभग 1300 है। इनमें से अधिकांश कोम में ब्रह्मविज्ञान का अध्ययन कर रहे हैं। केंद्रीय विद्यालय संगठन द्वारा एक भारतीय विद्यालय का संचालन तेहरान और दूसरा जाहेदन में किया जा रहा है।

उपयोगी संसाधन :

भारत के दूतावास : **तेहरान की वेबसाइट**
http://www.indianembassy-tehran.ir/

***

जनवरी, *2016*